

श्री आत्मानंद प्रकाश.

प्रकाशकः—श्री जैन आत्मानंद सभा-सावनगढ़ ...

वीर सं. २४७९

माघ

पुस्तक ४२ सं.

विक्रम सं. २००१

:: ४. स. १८४५ देखुआरी ::

अंक ६ मे।

श्री नेभिजिन स्तवन.

(राग-ओ चांद धूप न जाना...).

हे स्वाम स्याम सदोना !

हे स्वाम स्याम सदोना, तुम युन मैं तीत गाउँ;
मैं नाथ अंहारीसे, अंहारी चंगी अनाउँ.

हे स्वाम !० (१).

पशुओं पुकारें सुनके, दृपासे सन्नी "याए,
मुझ प्रान आधार मुजराए, कड़ना नजर न लाए;

नव लक्ष्मी प्रीत तोरी, मैं स्याम आन हुकाउँ.

हे स्वाम !० (२).

चाहूं न नेभि जिन डा, स्नामी कला मुकारी !
राजुल चेहारी चाहा ! तुम अन गये निरागी;
तुम पास पाउ दीक्षा, तुम आण शिर धराउ.

हे स्वाम !० (३).

राजुलडा हे के दीक्षा, शिवसुखडा ही सुभिक्षा;
शिरताज ! मुझे भी वैसे, शिवराज की हो बिक्षा;
नेभि ! लावण्य-धामा, मैं दृष्टि शिर छुकाउँ,

हे स्वाम !० (४).

पृष्ठ.

ओवा अझो अगवानने वकाला नथा—(२५).

ताणे भेटां दीला, पशु ढोल सुणे तां ढीला-ओवा.
तड़ा पाणे ताणी, पशु लागे उहर लाणी-ओवा.
करमां लांधी मागा, पशु वर्तनमां भोपाला-ओवा.
गरजे जाणे साफर, पशु धाम पडे तां काफर-ओवा.
दृवग मंहिर होडे, पशु छेनरवानुं नव छोडे-ओवा.
दृष्टि अणीमां ज्ञाडे, नहि ज्व प्रभुमां ज्ञेडे-ओवा.
जगतने जुह लाणे, पशु मनमां माया राणे-ओवा.

बुल भीजनी आणे, पशु नव गोतानी टाळे-ओवा.
पाणपण पीड पभाणे, पशु नहि अंतरने अजवाणे-ओवा.
प्रभु प्रभु मुख्यथी ज्ञाले, पशु छुगर भीजनी टाळे-ओवा.
मुखमां हरीरस राजे, पशु रोज भीजने आणे-ओवा.
ओरा जंतु रक्षे, पशु मानवताने अक्षे-ओवा.
नव आत्माने डारे, पशु परमात्माने पोकारे-ओवा.
ज्ञाले दीन द्याणु, पशु लुटे गरीजनां वाणु-ओवा.
भद्रर अभुते ज्ञाले, पशु नहि अंतरने ढोडो-ओवा.
नव कुथा सांखणाचा, पशु धाय जगतने गणवा-ओवा.
सुणे संतनी वाणी, पशु आये कर्म कमाणी-ओवा.

प्रकाश—मुनीश्री विनयविजय.

मतभेद अने गुणुग्राहिता.

मुनिश्री गुणविजय (संविज्ञ पालिक).

हेरेक संप्रदायमां विद्वानोना ऐ प्रकार नजरे
पडे छे. ऐक तो आगमप्रधान अने भीजे तर्कप्रधान.
आगमप्रधान पडिलो डंभेशां गोताना परम्परागत
आगमोने-सिद्धांताने शब्दशः पुष्ट रीते वजगी रहे
छे, त्यारे तर्कप्रधान विद्वानो आगमगत पदार्थव्यव-
रथाने तर्कसंगत अने रहस्यानुदूल भानवानी वृत्ति-
वाणा होय छे. ऐटसे केटलीक वर्षते अन्ते वच्चे
विचारभेद पडे छे. ऐ विचारभेद ने उम प्रकास्तो
होय छे तो काणकमे संप्रदायभेदना अवतारमां
परिणये छे, अने सौम्य प्रकास्तो होय छे तो ते
मान मतभेद इयमांज विरभी जय छे. क्षेम संप्र-
दायना धतिहासरुं अवसेकन करतां तेमां आना
अनेक विचारभेदो, मतभेदो अने संप्रदायभेदो अने



तेनां भूतभूत उक्ता प्रकाशना कारणे थुक्कि आगण २५४ तरी आवे छे. श्री जिनसद्ग क्षमाश्रमाणु आगमप्रधान आचार्य होता. तेमहे नैन आगमानाय परंपरागत चाल्यो आनन्दे होतो तेने अनुसरी संगत आप रथ्यानुं प्रवान डर्य कुर्हु छे. तेमां नै तर्फ आमाणासानुकूल खुल तेना उपर्योग पोताना समर्थनगां पुरी राने क्यों छे अने आगमनी आगण जनान् तर्फे उपेक्षालिय गडो छे, ज्यारे तेमना पुरोगामी श्री सिद्धसेन द्विष्टकृ तर्फप्रधान आचार्य होता. श्री सिद्धसेन द्विष्टकृ ना अथा भौलिक-राश्वांतप्रतिपादक अने ग्रन्थ विचार-पूर्णु छे. तेहो नैम तर्फशास्त्रना व्यवस्थापक अने विवेचक छे तेम नैने दर्शनला ओङ अनन्य आधारभूत आस पुरुष छे. श्री सिद्धसेन द्विष्टकृ चाताना संगतितर्फमा डेवली (सर्वज्ञ) ने डेवलज्ञान अने डेवलदर्शन ए अन्ते मुगपत ओटो ऐक्साथे धनां नथा ए आगम परंपराना भलथी विद्युक लहु अन्ते ओडल छे अने जुता नथा ओङ तर्फया सिद्ध कुर्हु छे, ज्यारे श्री जिनसद्गण्डि क्षमाश्रमाणु आगमपरंपरागत ते भतने असिमत रही श्री शिद्धसेनज्ञना विचारनो विगतनार प्रतिक्षेप विवेचावस्थामां क्यों छे. आम श्री जिनसद्गण्डि क्षमाश्रमाणु आगमपरंपराना महान् संरक्षक होता तेथा तेहो आगमवाही के सिद्धांतवाहीना विद्युत्या नैन वाहुमयमां शोणाय छे.

आ प्रकाशनो ए आस-सदापुरुषोमां भतमें सौम्य भतमें होता छनां डेवली युच्याहिता ने समझाविता की ते श्री जिनसद्गण्डि क्षमाश्रमाणु रथेल 'जितकृप चूल्हि' दर्शनार श्री सिद्धसेनस्त्रिवरे तेती रथादिमां तसनी ने गर्भारायक श्रुति ४ पद्ममां उरेली छे ते आ प्रमाणे—

"अतुगोगना आगमेना अर्थज्ञानना धारक, युगप्रधान, प्रधान तातोलिनो गहुमत, सर्वं तुति अने शास्त्रगां दुराल अने दर्शन-शान उपर्योगना आर्गस्थ अने मार्गरक्षक," १.

"उम्बना सुवासने आधीन थयेवा अमरो नैम उम्बनी उपासना करे छे, तेम ज्ञानइप मठरहना पिपासु मुनिझो नैमनां मुख्यप निर्जरभांथी तीक्ष्णेज्ञा ज्ञानइप अमृततुं सदा सेवन करे छे," २.

"स्य समय अने पर समयना आगम, लिपि, अखित, छन्द अने शब्दशास्त्रो उपर इरेला व्याख्यानेभांथी निर्मित थयेवा नैमनो अनुपम पशः पठड हशी दिशामा लगी रद्देत्ता छे," ३.

"नैमणे पोतानी अनुपम भविता प्रवावं वान, शानी, लेतु, प्रमाणु अने गण्डरम्भशतुं साविशेष विवेचना 'पिशेषावस्थक' मां अन्यतिगङ्क इकुं छ," ४.

"नैमणे उत्सवेना आपारे गुरुप विशेषना गुरुकृत्यु प्रमाणु प्रायवितना विक्षितुं विधान इत्यार 'अतद्वय सत' नी रथना इरी छे," ५.

"ऐवा पर समयना विद्यातोमां निपुणु, संयमीत अमण्डुता शार्गना अतुगामी, अने क्षमाश्रमाणुमां निधानभूत श्री जिनसद्गण्डि क्षमाश्रमाणुने नमस्कार!" ६.

—(नैन धतिहासभांथी उहूत).

नैन धर्मना ज्ञानदीपकना भक्ताणा.

नैन धर्म पाठ्याणी प्रगट थो छे अन्ना भान्यना भ्रमभूतक होता अम द्वे सिद्ध थुं छे. हिंहु सतातन धर्मनी साथे ज नैन धर्म स्वतंत्र शीते प्रायीत भास्तमां भणानो होतो ए द्वे धतिहास सिद्ध द्वे छे. नैन धर्मनी प्रायितना उपर द्वे आधमणु इरी शक्य नेम नथी. आधुनिक समयगां द्वाध्याणु चहती-पडतीना कारणोते वाये ओङ आगणा विशाल उडला नैना आपक, आ धर्म उमाणु अतिशय प्रमाणुमां क्षीघुयानो पाम्यो छे. नैन धर्मभिमां सिद्धान्तते पुष्ट आपा वगर



सांख्याशु आत्माचारनी भान्यताओ उपर ने ऐंच् ताण् थध जुदा जुदा पक्षो पडेख छे, तेथा नैनोना उत्कृष्ट धर्मने लानी थध छे. नैनोना साधुओ, संघ अने विद्वानो औक्य अने संपत्तरइ प्रवास करे गो घूमा जडतुं छे. जैन धर्मना पुनर्विकास माटे क्या गोलोने बगृत करवानी आवश्यकता छे ते शेषधवानी जडर छे. जैनधर्मनी पालनामां क्यां क्षयरोग लागु पक्षो छे ते लोकानुं काम नैतोतुं छे. पचीस सो वरस पक्षी शुं भद्रातीरस्वामि जेवा उद्धारक जैन धर्मभूं डाढ नहि जगे ?

जैन धर्म ज ओष्ठ छे, प्राचीन छे, आदर्शइप छे आ सर्वे भाव डेहवाथी कांक्ष इयहो हवे नथा. जगतना लेडोने आज तो साहित्यनी दरकार छे. अति सुंदरभावे सरणता अने सत्यना सिद्धान्तो उपर प्रगटावेल ज्ञानदीप आरे तरइ प्रकाश नाए तारे ज जैन धर्मना महान सिद्धान्तो अहिंसा, तप, संयम अने आत्मविजयनो साक्षात्कार करावी शक्ते. नैनो गो हवे पोतानी सर्व शक्तिओ. अने समृद्ध ज्ञानदीपी प्रकाशने आरे तरइ इलाववामां वापरवा नेहुँगो. ज्ञानना हित्य प्रकाश पासे महिरा, मूर्तिंगो, कियाओ पाठण वापरेला शक्तिओ. गौण-भावने प्राप्त करे छे. नैनोगे पोताना हुद्देओमां ज्ञान-मशालो चेतानी अनो सौम्य शांत ज्ञानदीपी प्रकाश अहार इलाववो नेहुँगो. ज्ञाननो हित्य प्रकाश ज्यारे ज्वली नीकण्ये त्यारे भतवेहो, पक्षापक्षींगो, आत्म-क्षियाओना जगडाओ, आ चार लेहो, अहमभत्य सर्व नाश पामरो, नैनो पेते विशुद्ध थध भत भतांतरो अने आंतरिक रागदंपो लज्जने गीजाओ उपर ग्रनिता पाडी शक्ते.

हिंदूधर्म अने जैन धर्म अनेमां सांसारिक लाभो करतां हुद्धनी विशुद्धितुं भद्रत्व अनेकध्याण वधारे छे. ज्ञान प्राप्तिनी प्रवृत्तिथी अने उत्कृष्ट नैतिक कर्तव्योना पालनथी अने धर्मेमां सत्य, शीर अने सुंदरनी प्राप्ति उपदेशा छे. अहिंसा परमो धर्म :

जो सिद्धान्त अने धर्मेंगे भान्य करेल परम सत्य छे. हिंदू धर्ममां यत्ताहिंकामां अमुक सरते भांसा-हारनुं विधान करी सर्वत्र भांसाहारने निषेध कराये छे. परंतु यत्तागाहिंकाना साहित्य सिवाय हिंदूधर्मना गीज साहित्यमां हिंसानो अस्तंत तिरस्कार करी अहिंसाने अपनाववामां आवी छे.

विषयासङ्ग अल्प संस्कारी भतुण्यो भाटे अने धर्मेमां सुधारणानुं विशाण क्षेव छे. आत्मानी परमार्थिक उच्चयदशा ग्राम करवा अने स्वच्छंहृति-अने त्यजना अने धर्मी आभ्यायिकाओ, सूत्रो अने सहभेदधारा प्रवर्त थाय छे. अने धर्मेमां उच्च आशयो छे. तपोभय छुन, सहनशक्ति, सरल-सादा आध्यात्मिक भावेना विकासना पाया उपर धमारतो यणी छे. अहिंसा, सत्य, अलबर्थ, अस्तेय अने अपरिग्रह उपर अने धर्मेंगे मुख्य भद्रर आध्यो छे. आत्मानो विनेता थवा परमशुद्ध अने ओष्ठ हुद्धनी रस्त्याने उपहेशेली छे. हुद्धना नैस-गिर्जिक पवित्र भावेनो विकास करी पोतपोताना भार्ग उन्नति करवाना अने अने धर्मेंगे प्रवर्तनो करेल छे. आत्मानी प्रगतिथी संपूर्णताना ध्येय तरइ अने धर्मी पोतपोताना अनुयायीओने ऐंची जय छे.

अने धर्मी परस्परनी पाडोसमां अत्यंत सानिध्यां जुदा जुदा वर्क्षोइपे दग्दरो वर्षो थया झाल्या-झुल्या छे. धर्षा, असूया, दोष, वैर-उरे परस्पर सेव्या वगर अने छुच्या छे. तेमां पछु जैन धर्मनी सहिष्णुता-सहनशीलता, क्षमा अने शान्ति अ भी अहिंसामां उद्दभया छे. अण, जेचावरी, भास-झाझ, जुलम, शक्तिनुं प्रदर्शन अने जैन धर्मने भान्य नक्षी. हजारो वरसो थया डाई समयना अति प्राचीन झाल्या ज अने समदृष्टि अने गीज धर्मो प्रत्ये समलाव हेभाज्या छे. अ धर्म जेरावरीथी वरदाववानी नीतिने पोताना उन्नत समयमां पछु रपर्शी करी नहोतो. जगतनां प्राचीन झालामां धर्मेनी ऐंचायेगी अने अण मापवाना वेरछेरो



आश्रय ऐणु उर्थी नथी. नैन धर्म विनाश अने संहारने पोष्या नथी. ऐणु शांतियी श्वी जपेयुँ छे. मानव मानव वस्त्रे अथ, तकरार, मारामारी के युद्धने ऐणु उत्तेजन आप्युँ नथी.

अेक लैनीतुँ परम कर्तव्य अहिंसा भन वयन अने कायाथी पाणवानुँ छे. अने आत्मानो विजय कर्नेहो छे, अनुँ कर्तव्य कर्मक्षय करवानुँ छे. शग्दैपरवैत ज्ञवनी नौडा आ तेझानी संसार-सागरभास्ती पसार करवा ए धर्म आहेश अप्ये छे. अनी भावनाच्यो उत्तम छे. जगतना सवा ए अजून भनुष्यो ने नैन धर्मना अहिंसा, सहानुभुति, सहकार, सहनशक्ति, शुद्ध विचार, आध्यात्मिक पृष्ठ, पूर्णता, हथा, अनुकूला, तप, रवाध्याय अल्पर्यार्थ, असतेय, अपरिहण, सत्य, क्षमा, औद्यार्थ, त्याग, वैराग्य, विवेक, शांति, संयम, धृतिवृत्त्य, निरक्षिभानता विग्रेरे पेताना छुक्यमां उतारे तो युद्ध, विश्व, भारक्षण, ओरवेर सौ अंध पडी जगतना लेकिनुँ परम कल्याण याय.

करांची ता. २५-१-४५
इंगरेजी धरमशी संपर्क

उपाध्याय श्रीमद् यशोविजयजीनुं

जीवन रहस्य ।

(गतांक पृष्ठ १०१)

उपाध्यायज्ञाचे अध्यात्म योग, लक्षित अने साहित्यना तमाम विकाशो. १५२ पेतानी वेघन-शक्तिनुँ ग्रन्थात्पाथरी दृष्टुँ छे. आध्यात्मिक अंथामां अध्यात्मसार, अध्यात्मोपनिषद्, सटीक अनीश अन्तीशीच्या, ग्रानसार विग्रेरे अथो. हता. सात वर्षांनी उभमरमां लक्षाभार रतेन्न अेक ज वर्षत सांबोद्धुँ ते कंडरथ थर्थ गयुँ छतुँ. आपी स्मरणशक्तिनो प्रादुर्भाव नानी उभमरथी १८ होतो; अमेशी बालशक्तयारी हता. सं. १६८८ मां पेताना संसारिक अंधुँ पञ्चसिंह अने मातानी साथे श्री नवविजयज्ञ मुनिना शिष्य

तरीके श्री विजयहेवसूरिता लाये नेण्याच्ये दीक्षा लाधी. अने नाम श्वेतविजय अने ग्रेमना लघु अंधुतुँ नाम धव्वविजयज्ञ मुक्तरर थयुँ. शुरु पासे ११ वर्ष अभ्यास करी गुरु साथे काशी ज्ञात वाण वर्ष लां अने पछी आआमां यार वर्ष अप्यंड उच्य अभ्यास करी, लगभग १८ वर्ष विद्या-व्यासांगमां गाणी ज्ञान पर्यंत अथो. रथवानुँ चालु राख्युँ; भाषादृष्टिए संस्कृत प्राकृत अने युजरातीमां पुष्टग्रंथितयो रची. विप्रयो परत्वे न्याय योग अध्यात्मदर्शन कथा चरित नय वैराग्य द्रव्यगुणपर्याय धर्म नीति विग्रेरे भूण अथो अने अनेक अन्य अंथानी टीकांप रथना करी. नैनेतर समाजमां पण ग्रेमना नेवा विद्वान असार सुधी जाणुवामां आवेल नथी. अेक अेच कवि तरीके तेमना युजराती भाषामां कायो नैन दर्शनना रहस्योवानुँ अपूर्व छे. सं. १७१८ मां श्री विजयप्रलसुतियो ग्रेमने उपाध्याय पदवी आपी.

नैनशास्त्रानुँ डिंडुँ ज्ञान तो तेमने भाटे सहज हुतुँ परंतु उपनिषद् दर्शन आहि वैकिं अंथानुँ तथा बैद्ध अंथानुँ वारतविक परिपूर्ण अने २५४ शान, ग्रेमनी अपूर्व प्रतिभा अने ग्रेमना शुरु-भाई श्री विजयविजयज्ञ साथे काशीमां २५ी वर्षी सुधीना अभ्यासना परिपाक्तुँ परिष्णाम हुतुँ. काशीची आव्या पृष्ठी अभद्रावाहमां ते वर्षतना सूता महो-वतभानी धृतीची अदार अवधान कर्या होतां तो तेमनी स्मरणशक्तिनुँ ज्ञवतं दृष्टांत छे.

नयमदीप, नयरहस्य, न्यायामृततरंयि सदित नयोपहेश, न्यायावाह उपलब्धता, न्यायालोक, अंडाज्याद, नैनतर्क परिभाषा शास्त्रवार्तासमुच्चय टीका अने अष्ट-सहस्री टीका आहि अथो. रथी नैन न्यायशास्त्रने जगत समक्ष रेलु कर्युँ छे; योगराजेकार घतंजलि-कृत योगसूत्रना केवल्यपाद उपर पण ग्रेमणे टीका लाभी नैन दृष्टियो धारणा ध्यान अने समाधिनो समन्वय कर्यो छे; संस्कृत प्राकृत अने न्याय अंथो उपरांत लोकभेद वाच्यांने गाठे उपकार॒पे शुर्ज॒र-भाषामां अदार पापरथानक सज्ज, समक्तिस इमं



ओक्षनी सजाय, गोगदहिनी सजाय, अगीआर अंगो
अने प्रतिक्षमणु गर्भांडितुनी सजामें, पट्टस्थानक चोपाध,
ज्ञासविज्ञान विगेरे आध्यात्मिक पदो, समाधिशतक,
समताशतक, त्रय चोवीशीना स्तवनो, विलोरमान
जिन स्तवनो, दृष्ट्युपर्याय रास, सवासो, होद्दो
अने साडा त्रज्जुसो गायाना सीमंधरस्वाभीने विनिति
इप स्तवनो, शुरुअंधु श्री विनयविज्ञयज्ञना स्वर्गवास
पछी श्रीपाणराजनो अधुरो रहेक रास के क्षे छाल
पूजारपे ओलाना दिवसोमां गवाय छे, ते पूर्ण
कर्त्तो विगेरे साहित्य छे. ज्ञानसार अने अध्यात्म-
आर विगेरे यथना रथयिता क्लेवा रीते अध्यात्म
अने वैग्रायमां स्वयंनिभम छतां अने तर्क अने
आउरण्यनुं उच्चयकोटितुं ग्रान धरावता छतां सादी
भाषाना स्तवनो. ज्ञेमठे जगज्ञन जगताल हो, लधु
पञ्च छुं तुम भन नवि मावुं रे विगेरे प्राकृत
मनुष्योने भाटे पञ्च क्लेवा सरणताथी भाषाद्वारा उतारी
श्वेद के क्षे ओमनी शक्तिनी अपूर्वता गण्य.

ओमना स्मरण्युक्तिना खोग दृष्टांत तरीके एक
हड्डीक्त गे छे के श्री विनयविज्ञयज्ञ ज्ञेके तेमना शुरु-
बाध हता तेमनी साथे काशीमां ओमने विद्याक्षास
भाटे ज्वुं थयुं; श्री विनयविज्ञयज्ञे व्याउरण्य
विषय अलाय कर्त्तो अने श्री यशोविज्ञयज्ञे न्याय
विषय अलाय कर्त्तो. त्रय वर्ष पर्यंत शाश्वतुं अध्य-
यन कर्त्तुं, ओमनो विद्यागुरु लक्ष्मायां लैन धर्मनो
दृष्टि ज्ञां विनाहिती तेमने प्रसन्न करी तेमनी
पासेथा संतोषपूर्वक विद्याअलाय करी; परंतु एक
अपूर्व अंथ अध्यापक पासे होता, ते अंथ क्लाइने
ज्ञानवता नहोता; श्री यशोविज्ञयज्ञ अने विनय-
विज्ञयज्ञे प्रसंग पामी अर्ध अर्ध अंथ लेछ
अनेगे भेगां भणी भुझे करी पूर्ण कर्त्तो. प्रसंगो-
पात पोताना अध्यापकने ज्ञानी भारी भागी;
अध्यापक ओमना स्मरण्युक्ति भाटे तालुअ अन्यो
अने ओमनी प्रीति अने तरइ अनेक अंशे वधी.
हमे हमे श्री यशोविज्ञयज्ञ महाराजने काशीना पडितो
तरइथा न्यायविज्ञारदनी पहवी भणी हता अने

पछीथी एकसो अंथो न्यायना अनाव्या पछी
न्यायाचार्य थया.

ओमना समक्षालीनमां श्रीमहृ आनंद्धनशु, ग्रान-
विगणसूरि, उद्धरत्न. भानविज्य उपाध्याय, जिन-
विज्य, श्रीमहृ विनयविज्य, ज्यसेम, ७० सकल-
चांद्रलु अने भोहनविज्य हता. श्रीमहृ आनंद्धनशु
एक अध्यात्मिनिष अपवधूत जंगलना योगी हता तो
उपाध्यायज्ञ अपूर्व व्याख्यानशक्तिद्वारा अने ग्रंथ-
साहित्यना उत्पादनद्वारा लैनदर्शननी सर्वग्राही
प्रभावना करी रथा हता. (चालु)

श्री इतेहुच्यंद अवेरभाष.

॥ अथ प्रथम श्री कृष्णभजिन स्तवना॥

कृष्म जिणंदशुं प्रीतडी किम कीजें हो कहो
चतुर विचार ।
प्रभुजी जइ अलगा वस्या तिहां किंजे नविहो कोइ
वचन उचार ॥ १ ॥

उत्थानिकाः-

अङ्गभजिन स्तवनः-

आ स्तवनमां आचार्यहेव प्रक्षुनी साथे प्रीति
क्वा प्रकारे करवी तेनो भार्ग देखाउे छे.

गमे ओवो कठायु प्रयेंग छोय तथापि जेती
साथे प्रीति जेडवी होय तेनी साथे अनुकुण थधज्ञां
प्रीति जेडाय छे ज्ञेम के प्रक्षु वितराग छे, भाटे ज्ञे
आपेणु वितरणतानो आंशा आपण्यामां लावीअे तो
प्रक्षुनी साथेनी दुर्लभप्रीति पणु सुखल थध ज्ञाय छे.

(१) संसारमां राग त्रय अकारना छे.
ऐट्के के कामराग, स्नेहराग अने दृष्टिराग;
नाना प्रकारना पदार्थी के लक्ष्मी के मिक्त विगे-
रेनी धर्याता ते कामराग, सगां संघंधीअ. उपर
ने स्नेह रहे ते स्नेहराग अने हेह उपर अर्थात्
हेह ते हुं छुं ए जे राग थाय छे ते दृष्टिराग.



गाथा १-सरण शब्दार्थ—

ने आत्माएँ रागद्वेषनो संपूर्ण जय करीने
अनंत गुणों पोताना आत्मामां उद्भवानी भारा
जेवा सर्व आत्माओंने गुणवान बनावानी भावना
करतां ने तिर्थके संपदा अने अतिशय संपदा
प्राप्त करी छे अन्वा इष्ट जिनेश्वरनी साथे हुं
ज्ञानासु साधक डेवी रीते प्राप्त करुं ? हे ! यतुर
अंतरात्मा हुं परभावथी विमुख थधने एट्ले
स्वभावानी सन्मुख थध ने परमात्मा ऋषभहेवने
हुं ज्ञेष्ठ, जाणी रखो छे, तेमनी साथे भने प्रीति
करवानो मार्ग देखाऊ।

कारण डे, हुं जाणुं हुं के प्रभुज्ज सिद्धक्षेत्रमां
भाराथी अणगा ज्ञाने वस्या ए अने लां वयनथी
व्यवहार थतो नया तो हुं भरतक्षेत्रमां रखो ए
अणगानी साथे प्रीति डेम करी शकुं ?

कागल पण पहोंचे नहीं, नवि पहोंचे हो
तिहां को परधान ।
जे पहोंचे ते तुम समो, नवि भाले हो कोइनुं
व्यवधान ॥ २ ॥

गाथा २-सरण शब्दार्थ—

वणी ज्ञानासु साधक प्रीतिनी भीजु रीत कडे
छे. एट्ले के, कागण लभाने पथ जेमना साथे प्रीति
करवी हेय तेनी साथे करी शकाय छे; परंतु जिनेश्वर
भगवान डे ने हाल सिद्धक्षेत्रे छे त्यां कागण पथ
पहोंचे एमै नया. आ ए उपनंत प्रीतिनो त्रीने
मार्ग पथ छे अने ते ए के भारा तरक्षथी डाई
प्रतिनिधि भोइलाने पथ प्रीति करी शकाय छे. परंतु
त्यां प्रतिनिधि पथ पहोंची शके तेम नयी, कारण डे
जे त्यां ज्याचे ते तो प्रभुना सरभा थध ज्य छे
अने त्यांथी डाई पाण्डुं आवी अंतर के भेद
ज्ञानावता नयी.

प्रीति कर ते रागीया, जिनवरजी हो तमे तो
वितराग ॥
प्रीतडी जेह अरागीथी, मेलववी ते हो लोको-
तर माग ॥ ३ ॥

गाथा ३-सरण शब्दार्थ—

संसारमां परस्पर प्रीति करुनार रागी हेय छे
अने जिनेश्वरले तो वितरागी छे. भारे अरागीथी
प्रीति भेगववी एतो मार्ग डाई लौकिक नहि पथ
डाई लोडातर हेवा ज्ञेष्ठ ए. भारे परमात्माभिमु-
ख (यतुर) अंतर आत्मा प्रभुनी साथे प्रीति
भेगववानो लोडातर मार्ग भतावे छे. (लौकिक मार्ग
धन्द्रियेथी देखाती-ज्ञानाती वस्तुओ. उपर प्रीति
करावे छे. अने लोडातर मार्ग धन्द्रियेथी ज्ञानाती
वस्तुओ. तरइ विमुख रही परमात्मसन्मुख थध
अझी पथस्तुने ज्ञानावे छे. एट्ले के धन्द्रियेथी
नहि पथ धन्द्र एट्ले आत्माथी ज्ञानाती वस्तु पर
प्रीति करावे छे.

प्रीति अनादिनी विषभरी ते रीते हो करवा
मुहु भाव ॥
करवी निर्विष प्रीतडी किण भावै हो कहो
बने बनाव ॥ ४ ॥

गाथा ४-सरण शब्दार्थ—

अनादिकाणथी भारी विषभानां प्रोति छे ते
विषभरी छे (जेथी जन्म भरण थया करे छे) हवे
भारे एवीज रीते साही अनंत भागे निर्विष अमृ-
तमय प्रोति करवी छे के शास्त्रत ज्ञवननी साथे
छे. ए प्रोति डेवी रीते अनी शके, ते हे ! परमा-
त्माभिमुख अंतर आत्मा ! भने भताव.

प्रीति अनंती परथकी, जे तोडे हो ते जोडे एह ।
परम पुरुषथी रागता एकत्वता हो दाखी
गुणगह ॥ ५ ॥

गाथा ५-सरण शब्दार्थ—

परमात्माभिमुख अंतरात्मा ज्ञानासु साधक
ज्ञवने ज्ञानावे छे के अनंतकाणथी तारा परभावमां
जे प्रोति छे ते जेम जेम तुं छाउते ज्य तेम
तेम ते प्रोति परमात्मानी साथे जेडाई ज्य. एट्ले
के जेम जेम तारा निज स्वभावमां (आठ निर्मण
इच्छ प्रदेशमां रहे तो ज्य) तेम तेम परम पुरुष

जिनेन्द्रहेव साथे तारी प्रीति थती जय; ने प्रीति परमात्मानी साथे ऐकत्वाइप ऐटदे तदृश्य थती जय, के ने अनंतगुणतुं वाम शास्त्रमां देखाउेलुं छे. कारण के ओ गुणतुं धर छे.

प्रभुजीने अवलंबता निजप्रभुता
हो प्रगटे गुणराश ॥
देवचंद्रनी सेवना आपे मुज हो
अविचल सुख वास ॥ ६ ॥

गाथा ५-सरल शाखार्थ—

हे प्रभु ! हुं आपना शुद्ध गुणते नेभ नेभ अवलंभतो जउं हुं तेभ तेभ गुणता धरृश्य ऐनी भारामां प्रभुता प्रगटती जय छे, माटे देवेना चंद्र सभान हे जिनेन्द्रहेव । धन्य अे तमारी सेवने के ने भने आनियद सुआ ऐटदे सिद्धात्मानी आपि करावे छे.

— द. क. लालन.

सत्कार समारंभ.

महा वद ५ शुक्लनार, ता. २-२-४५ ना. रोज
श्रा नैन आत्मानंद सखा भावनगर तरक्षी “ शेठ बोगीलाल भगनलाल लेक्यर होल ” नामाभिधान करवा अने शेठ भोडनलाल ताराचंदने मानपत्र आपवानो भेजावडो करवामां आयो छतो.

आरंभमां अहेन ईन्दुभती गुलाअचंद्र भाव-पूर्वक भंगणाचरण कर्या आह श्री वडवा नैन रोही भंडणे रवागतगीत रजू कर्या आह डॉ. जशवंतराये आमंत्रण-पत्रिका वांची संभालावी हुती.

स्याराह संस्थाना प्रभुआ शेठश्री गुलाअचंद्राघ्ने उपरेक्ता कर्या माटे प्रासांगिक विवेचन करी राजेश्री बोगीलाल लेक्यर होल अने ओर्डर गेप्ट-टीग छापी झुक्की मुक्कवा राजेश्री भोडनलालभाघ्ने विनति करी हुती; नेथी ते होल अने प्रतिकृति झुक्की मुक्की हुती अने प्रभुआश्री गुलाअचंद्राघ्ने योताना अंधु तुल्य अने सभाना सेक्टरी गांधी वक्षबदास विभूवनदासने पोतानुं व्यक्तव रजू करता जणाऱ्यु के सभाना वाणु मुख्य उद्देशो जणावी तेमां आ सत्कार-समारंभनो समावेश थाय छे नेथी ते माटे आ भेजावडो करवामां आयो ले.

शेठश्री बोगीलालभाघ्ने तो दान हेवा माटे अभंग दार शास्या छे. ऐमनामां सभाजमांज आपवु ऐनी संकुचित दृष्टि नथी; परंतु सामाजिक के सार्वजनिक काधपण डार्येमां दाननो प्रवाह वहेतो राख्यो छे, तेथीज तेमज तेओश्रीमां उक्षरता, सौजन्यता, लघुता, समयसता अने दृष्टिता अे पांचे शुण्णानो समन्वय थयेलो छे, तेथी तेओ



शेठ बोगीलालभाघ्ने भगनलाल भीकवाळा.

भावनगर नैन समाजना भूषणरूप, तेमज तेनी जेडी धीश नथी. आवा दानवीर नशरतनुं नाम आ सभाना डार्य अंग साथे चिरस्थायी थाय तो डीक तेभ धारी, सभाना ऐक होलने बोगीलाल लेक्यर होल आपवुं अने तेनी याही रहे माटे तेमनी प्रतिकृति सभामां भावपूर्वक मुक्की ते माटे प्रथम आ सत्कार छे. हवे भीजे प्रसंग राजेश्री भोडनलालभाघ्ने शीर्ष उद्घोगना धंधामां सारी लक्षणी प्राप्त कर्या पडी पुष्यगोगे, पूर्वना आराधने प्रथम दान हेवानुं पगलुं डगवण्णीविषयक नैन संस्थानोने सभावत करवानुं शरि कर्या, पांच हजार हस उजार जेडी रेडी रेडीमानी सभावतो शरि करी, परंतु तेमनी डगवण्णीपरनी इच्छीतो अनुसन तो नव मास पहेलां तणाळ तार्थ नैन विद्यार्थीगृहना



તેમના હાથે થયેલ ઉદ્ઘાટનથી જણવામાં આવ્યું
એટલે તળાજ તીર્થના વર્તમાન ધ્રુતદાસ સાથે



શેડ મોહનલાલભાઈ તારાચંદ

તેમનો શું સંખ્યાંધ છે તે જણાવવું અસ્થાને નથી.
આચાર્યદૈવશ્રી વિજયનેમિસ્સરિસ્થેરજી મહુરાજ
નેઓ વિદ્ધાન અને પ્રભાવશાળી ગુરુદેન છે; તેમના
ઉપરેશથી જ આ તીર્થક્ષેત્રની કમીટીમાં શ્રી બોગીવાલ-
ભાઈ, શ્રી આનિતલાલભાઈ, શ્રી પુરુષેતમદાસભાઈ
અને વલ્લભદાસભાઈ નેડાયા અને નિયાર્થીંગૃહને
મોહનલાલભાઈએ રૂ. પચ્ચીસ હજાર આપણા અને
તેમના તથા ભાઈ દલીયંદભાઈના પ્રયાસ વડે
ઇપ્પિએ એ લાખ ઉપરનું સુંઅધમાં ઇડ થયું.

વળી આ તીર્થના આત્મારૂપ અને કમીટીના હાથ-
પગ રાજેશ્રી ઘાનિતલાલભાઈ વેરા છે, તેનો પણ પરિ-
ચય આપવો તે અત્યારે આપ્ય છે. તે અનેના આમર-
દ્યંદભાઈ વેરાના સુપુત્ર છે. જેની પાંચ પેઢી થયા સંધ્યા
અને શાલિની સેવા ઇર છે. તે સેવા ઉપરાંત ભાઈ
આનિતભાઈના પુષ્યયોજને તેમને આ તીર્થની સેવા વિશેષ
સાંપડી છે, એટલે પોતે પ્રમાણિકપણે, શ્રદ્ધા-ભાવના-
પૂર્વક તન, મન ધનતો લોગ આપી પોતાના ધંધાને ગૌણું
કરી સેવા આપી રહ્યા છે, જે સમાજના ધન્યવાદે પાત્ર
છે. અને સુમારે એક ધાન્યતી જ આયર્ણીલ ૫૦)

ઝ્રાણના નેવા ઉચ્ચ તપના પ્રભાવે તેમનો આત્મા
ઉજ્વલ થતાં સેવા કરી રહ્યા છે. બાવિમાં અનેના
જૈન સંઘના શેઠેને લાયક પણ અન્યા છે.

રાજેશ્રી મોહનલાલભાઈની વધતી જતી ઉદ્ધરતા,
કૃગરણી પ્રત્યે પ્રેમ નેંદ્ર નેંદ્ર આ સભાના
પેટ્રન ડેટલાય વખત પહેલાં થયેલ હોવાથી તેમનો
માનપત્રદાર સત્કાર કરેવાની આ તક લેવામાં
આવી છે વગેરે જણાવ્યું. બાદ ર. ર. શ્રી માસ્તરર
મેતીચંદભાઈ જવેરચંદનો સાહાતુભૂતિનો આવેલ સદેશ
ભાઈશ્રી ગુલાબચંદ લલુભાઈએ ટ્રૂંડમાં વિવેચન-
પૂર્વક જણાવ્યો કે:—આપણા સમાજના ભાગ છે
કે આવા એ નરરતોની સમાજસેવા હિન્દુ પ્રતિહિન
વધતી ગઈ છે અને તેના સંખ્યામાં સુરખ્યી વહેબ-
દાસભાઈએ ફરેક દિનિથી ખૂબ વિવેચન કરેલું છે,
તો એટલું જ કહું છું કે, આ આપણા સમાજના
નાયકો દિનપ્રતિહિન આગળ વધતા રહી સમાજ-
સેવાના ઉત્કર્ષમાં મેરા ક્રોણો આપણે જે આવી છે.

ત્યારાદ નેચંદભાઈ (શેડ આયુંદજી ડલ્યા-
ઘુણી પેઢીના અહીં ભાતાના સુનિમ) એ ગ્રાસ-
ગિંદ વિવેચન કર્યા આદ સભાના ટ્રોડર શેડ શ્રી
અમૃતલાલ છગનલાલે માનપત્ર વાંચી સંભળાવ્યું હતું.
ત્યારાદ શ્રીયુત બોગીવાલભાઈના સુલારક હયે
માનપત્ર અર્પણ કરવામાં આવ્યું હતું. ત્યારાદ
શકેશ્રી મોહનલાલભાઈએ જણાવ્યું જે, બોગી-
વાલભાઈના પરિયથી મેં સેવા કરવાની શરૂઆત
કરી છે; તે જણાવવા સાથે પોતાની લધુતા જીવાતાં
સભાના ઉદ્દેશો ઉચ્ચ છે તે પ્રમાણે અને ઝર્યાવાહી
ઉત્તમ છે. છેવટે બોગીવાલભાઈએ પણ આનંદ જહેર
કરવા સાથે સભાનો આસાર માન્યો દનો. આ
પ્રસંગે ખુશી થવા નેવું તો એજ છે કે ભાઈશ્રી
આનિતલાલભાઈ, રમણિકલાલભાઈ, દુલ્લભદાસભાઈ
તથા શ્રી દલીયંદભાઈ યારે બંધુઓ સભાના આવા
સુંદર કાર્યો જોયી સભાના પેટ્રન થયા હતા અને
શેડશ્રી બોગીવાલભાઈએ આ હોલને સૈંદર્ઘ્યતાવાળો
નનારવા શેષ એક હજાર ઇપિયા સભાને આપવા
જણાવ્યું હતું. છેવટે ભાઈ દરિલાલ દેવચંદભાઈએ

सर्वनी आभार मान्यो होतो अने प्रमुखश्रीओं हार तोरा एतावत कर्या आह दूधपारीथी आवेस सर्वनी संतार करवा आह मेणावडा विसर्जन थयो होतो.

वर्तमान समाचार.

श्री तात्पूर्वजग्गिरि तीर्थ जैन विद्यार्थीगृहात् आत्महृत्.

गया महा वडी १३ शनिवारना शैक्षण उपर लीभेशी ज्ञानीमां विद्यार्थीगृह आंधवा तीर्थ-कर्मी अने विद्यार्थीगृहात् कर्मीयों नका कर्या प्रमाणे आ सञ्जना परम इपाणु महाराष्ट्री साहेब विजयदुर्वरणा साहेबाना सुआरक हस्ते आत्महृत् करवामां आयुः छे. अने कर्मीना प्रमुखश्रीओं तथा डार्पणावडोना आमंत्रणीये नेक नामदार महाराज साहेब श्री कृष्णबुद्धगारसिंह साहेब, पूल्य मासिया (क्षीरशंखना शनियमातुरी) नामदार दीवान साहेब पट्टणी साहेब, श्रीमती वशीमती अहेन पट्टणी साहेब, शनियना सुभ्य अमदवाडी आवनगर तगाज नैत नैतेतर वधुयों अने प्रज्ञ भणी नश हजार मानवोंनी भेद्या होती आत्महृत् वधते जुहा जुहा वक्ताना विवेचने पछी आत्महृत् कर्या पछी महाराज साहेब, श्री राष्ट्री साहेब, मासिया साहेब, गोलीस उपरी अने राजन अमदवाडी कर्मीना डार्पणावडो यालीने हुंगर उपर गया होता. गढ सावना वैशाढ वडी १० ना शैक्षण महाराज साहेबना पवित्र परगां तां थया होता, ते विवासनी यादगीरी गाठे तीर्थकर्मीयों स्थापित करेल महाराज साहेबना नामयी डार्पणस्थान्तुं उद्घाटन परम इपाणु शनिय साहेबना सुआरक हस्ते करवामां आयुः हतु. आ समारंभ आ तीर्थना धतिहास लभाई जतो आ अन्य तीर्थाम जापियां अनशे तेनी आ आगाही छे. निधार्थगृहात् इउ श. ए लाखतुं यायुः छे. हुण वधारे थवा संलग्न छे. अमो आ तीर्थ चीर्ण-कर्त्ता आगाह थफ नैत समाजामां धतिहासिक अद्वितिय तीर्थ अने तेव परमात्माना प्रार्थना करीये छाये. श. २५१११) इथीया सुभ्य मंहिरनी सामे

श्री पुंडरीकरवामीना मंहिरने भाटे शेठ श्री मोहन-लालबाईचो अर्पण करवायी भूण नायक ग्रलु अिराजमान करवानो आहेत आपवामां आय्यो होतो.

सोनगढ श्री महावीर चारित्र रत्नाश्रमना विद्यार्थीनिवासगृहात् उद्घाटन.

आ मासनी सुद ३ शुक्रवारना शैक्षण हानवार नैत नरसत शेठ भोगीवालबाई मगनवालना मुआरु दक हस्ते आनंदपूर्वक दशहाराजी रीते उद्घाटन थयुः छे. अनेक गामना नेन असुयोने आमंत्रण आपवाया तां आव्या होता. प्रमुखस्थान शेठश्री मोहनवालबाई ताराचंदने आपवामां आयुः हतु. अनेक वक्तायोना विवेचने थया होता. प्रसिद्धवक्ता मुनिराज श्री चारित्रविजयकुना उपहेस अने आत्म भोगवडे आ संस्था वधती नय छे. आ उद्घाटननी शइयात अने होठे आ संस्थाना आत्मा मुनिं श्री कल्याणयंद्रज महाराज तेनो धतिहास अहु ज लागण्यपूर्वक उच्च शंखीयी कडी अतायो होतो. शवधारी महाराज श्री चारित्रविजयकु महाराजे मुनि श्री कल्याणयंद्रज महाराज जेवा निष्प्रात अने आ संस्थाना प्राणशृप अनेवा ते मुनिश्वाने सोपवाया तेनी शृद्ध द्विशानुद्विस थती नय छे तेने भाटे महाराजश्रीना भनेव्या भावि भाटे अहु उच्च छे. शेठश्री भोगीवालबाईचोने मानपत्र इपाना कारडेटमां प्रमुख-श्रीना लाये अर्पण करवामां आयुः हतु. आ निवासगृह भाटे श. पांच हजारनी २५म लाई गोपीबद्धसंघाई वगेरेने नमनगरनिवासी जेसंग-बाई जगत्तुनहासना सुपुत्रोये अर्पण करी होती. नैत केनकेन-सः सोण्यायुः अविवेशन मुंभाईमां.

स्वागत कर्मीना अध्यक्ष तरीके रावसाहेब कान्तिलालबाई ईश्वरसाहेब ने. पी. नी थयेली वरेण्यी-ता. ८-२-४४ ना शैक्षण केनकेन-स ओरीसमां शेठ भातीयं ह गोपीबद्धसाहेब डापडीयाना प्रमुखपत्रा नाये मजेली गोपीबद्धसाहेब शेठश्री कान्तिलाल-बाई धध्यरक्ताव ने. पी. नी स्वागतकर्मीना प्रमुख तरीके, उप-प्रमुखो शवभालहुर शेठ नानगुलाई लधा-लाई छ. पी., शेठ भोगीवाल दंगचंद अवेरा, शेठ अगवानहास दंगचंद, शेठ शीमण तेलु कामा, शेठ

Reg. No. B. 431

शमशु रवण सोनपाण, शेठ इक्षीरथं ह डेशरीयं ह, शेठ रघुषोऽभाई रायचंद, अवेरी आर्धचंद नगिनीहास, शेठ रतीलाल मधुलाल नाथापीहास, शेठ मुण्यं ह सज्जमलाज, शेठ अवेरथं छु, चीद सेहेतरीओ तरीके डॉक्टर चीमनलाल नेमचंद श्रीइ, शेठ चंदुलाल वर्धमान, शेठ मूण्यं ह खुलापीहास, शेठ हामल जेहाभाई एसे सर्वं हेदेहरोनी सर्वातुमते चुंटणी थध हती, अधिवेशन मार्य महिना ता. ३०-३१ अने एंग्रेज ता. १ ली तथु दिवसे नडी इवामां आव्या छ. सुंभृत नैन समाजमां उत्साह सारो छ. सर्वं नैन अंधुओओ सहकार आपवानी ज़दर छ.

न अनिवेहन.

आ सभाना सर्वे मानवंता सभासदो (पेट्रन साहेओ, लाईइ अने वार्षिक सभ्यो) ने निवेदन कुरवा रेज लाई ईमी के, आ सभा तरही प्रातः समरणीय गुरुहेवथी आत्मारामशु भद्राराजनी जयंती (स्वर्गवास तीथी) नेठ सुह ८ रोज श्री सिद्धायलजु उपर उज्जवाती हती, परंतु संवत १६६० ना चैत्र सुह १ ना रोज वडोदरा अने पाटण शहेरमां जन्मस्तापिद समारोहपूर्वक उज्जवाया पर्याय, घण्टा स्थले दर वर्षे ते ज तारीखे जन्मज्यंती उज्जवी गुरुभक्ति थती हती; परंतु परम-कृपाणु आचार्य महाराज श्री विजयवद्दलसुरि-धूरणु महाराजनी धृत्या अप्य स्थले एकज सरभा राते जन्मज्यंती उज्जवाय ते समुच्चय रीत योग्य लागवाया, तेच्या साहेबनी आजाथा अने आर्थिक

सहाय आपनार शेठ साहेय सक्षय-हलाई भेता-बावभाई मूण्यज्ञनी अनुभतीयी आ वर्षथी ६वे पछी हर वर्षे आ सभा तरही चैत्र सुह १ ना रोज श्री सिद्धायलजु तीर्थे तेज मुज्ज्ञ जयंती उज्जवी गुरुभक्ति करवामां आवशे. जेया उपरोक्त सर्व सभासदां धुग्गो चैत्र सुह १ ना रोज श्री सिद्धायलजु उपर गुरुभक्तिनो लाल लैता भार अवश्य पत्तारसो।

जे जे वर्षमां चैत्र मास ऐ आवे ते वर्षते वीज चैत्र सुह १ ना रोज जन्मज्यंती उज्जवी अने जे जे वर्षमां नेठ मास ऐ आवे ते वर्षते प्रथम नेठ मासनी सुह ८ ना रोज स्वर्गवास तीथी समजवी. कारणु के गुरुहेवथी आत्मारामशु भद्राराजनी स्वर्गवास अर्धीक नेठ सुह ८ ना रोज थेदेवो छ. ते प्रभाणे आचार्य महाराजश्री विजयवद्दलसुरि-धूरणु महाराजनी आज्ञा छ.

नवा थेला मानवंता पेट्रन साहेया।

अने लाईइ भेत्तारसो।

- १ शेठश्री चंदुलालभाई टी. शाह सुंभृत.
- २ शेठश्री आन्तिलाल अमरय-हलाई वोरा भावनगर
- ३ शेठश्री २मणीडलाल नानयंद सुंभृत
- ४ शेठश्री दुर्वा-भास अवेरथंद
- ५ शेठश्री दलायंद मुख्योतमहास तणाण छाव सुंभृत परिचय हरे पर्याय आपवामां आवशे।
- ६ शेठ गांगज गोपार-हीगरस लाईइ भेत्तारस

- :- : विषयानुक्रम :-

१ श्री नेमिल्लिन स्तवन	(मु. श्री दक्षविजयल) पा. १०५
२ उपरेशक पद	(मुनि श्री विनयविजयल) पा. १०५
३ भत्तेह अने गुण्याहिता	(मुनि श्री पुष्यविजयल) पा. १०५
४ नैन धर्म गानहीपडना प्रकाशो	(श्री दुर्गस्ती धरमरा संपर्क) पा. १०६
५ उपाध्यायथी यशोविजयलजुतु अवन रहरय	(इतेहयंद अवेरभाई) १०८
६ श्री इष्यभजिन स्तवन	(इतेहयंद कर्मयंद वासन) पा. १०८
७ सतहार समारंभ
८ वर्तमान समाचार अने गुरुहेवथी आत्मारामशुनी जन्मज्यंती भद्रात्मव माटेती नारी नम्र सूचना पा. ११४	पा. ११३

मुद्रक : शाह गुलाबयंद लक्ष्मीभाई : श्री भद्रात्मव ग्रीन्टीग्रेन्ड : दाखापीठ-भावनगर.